AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

बस्तर की रानी जुगराज कुंवर का विद्रोहः एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन

ORIGINAL ARTICLE

Authors
ईश्वर लाल
शोधार्थी
डॉ. डिश्वरनाथ खुटे
शोध निर्देशक
इतिहास विभाग
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

रानी–चो–रिस विद्रोह बस्तर के इतिहास में रानी जुगराज कुंवर के नेतृत्व में संचालित एक दीर्घकालीन जनप्रतिरोध था। इसकी पृष्ठभूमि में तत्कालीन राजकीय परिस्थितियां, सामाजिक सम्मान, स्थानीय जनभावनाएं तथा ब्रिटिश हस्तक्षेप से संबंधित प्रश्न जुड़े हुए थे। लगभग आठ वर्षों तक चले इस संघर्ष में रानी जुगराज कुंवर ने सक्रिय नेतृत्व किया तथा उनके समर्थन में बस्तर के स्थानीय समाज और महिलाओं की सहभागिता रही। रानी द्वारा राजमहल की सीमाओं से बाहर निकलकर सार्वजनिक रूप से विरोध करना इस आंदोलन की प्रमुख विशेषताओं में रहा। आंदोलन के दौरान महिलाओं की भागीदारी ने इसके सामाजिक आधार को व्यापक स्वरूप प्रदान किया। रानी–चो–रिस विद्रोह में राजकीय व्यवस्था, सामाजिक सम्मान और स्थानीय अधिकारों से जुड़े प्रश्नों के साथ ब्रिटिश हस्तक्षेप के प्रति असंतोष अभिव्यक्त हुआ। इस प्रकार यह विद्रोह बस्तर के इतिहास में रानी जुगराज कुंवर के नेतृत्व, महिला सहभागिता, सामाजिक चेतना और जनजातीय प्रतिरोध से संबंधित एक विस्तृत ऐतिहासिक घटना के रूप में सामने आता है।

मुख्य शब्द

बस्तर, नेतृत्व, जनसमर्थन, सामाजिक सम्मान, सार्वजनिक विरोध, राजकीय व्यवस्था.

प्रस्तावना

उन्नीसवीं शताब्दी भारत के इतिहास में राजनीतिक, प्रशासनिक तथा सामाजिक परिवर्तन का संक्रमणकाल था। इस अवधि में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने केवल अपने प्रशासनिक नियंत्रण का विस्तार ही नहीं किया, बल्कि भारतीय समाज की पारम्परिक व्यवस्थाओं, स्थानीय शासन–संरचनाओं तथा सांस्कृतिक जीवन में भी व्यापक हस्तक्षेप प्रारम्भ किया। इसका प्रभाव विशेष रूप से जनजातीय क्षेत्रों पर अधिक पड़ा, क्योंकि इन क्षेत्रों की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक परम्पराएं और राजनीतिक व्यवस्था प्रकृति एवं सामुदायिक जीवन पर आधारित थीं। बस्तर क्षेत्र भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा। यहां ब्रिटिश हस्तक्षेप, मराठा प्रभाव, राजसत्ता में बढ़ती दखलंदाजी, प्रशासनिक नियंत्रण तथा स्थानीय परम्पराओं की उपेक्षा के कारण समय–समय पर अनेक जनजातीय विद्रोह हुए, जिन्होंने बस्तर के इतिहास में प्रतिरोध की एक विशिष्ट परंपरा का निर्माण किया।

इन्हीं विद्रोहों में रानी–चो–रिस विद्रोह (1878 ई.) बस्तर के इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय है। यह विद्रोह केवल राजपरिवार के भीतर उत्पन्न विवाद का परिणाम नहीं था, बल्कि तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों, औपनिवेशिक हस्तक्षेप, राजकीय स्वायत्तता के संकट तथा सामाजिक असंतोष की संयुक्त अभिव्यक्ति था। ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा बस्तर के राजकीय मामलों में बढ़ते हस्तक्षेप, राजा भैरमदेव के निजी एवं पारिवारिक जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णय तथा पारंपरिक राजकीय मर्यादाओं की उपेक्षा ने व्यापक असंतोष को जन्म दिया। विशेषतः रानी जुगराज कुंवर द्वारा इस हस्तक्षेप

का विरोध केवल व्यक्तिगत सम्मान का प्रश्न नहीं था, बल्कि वह बस्तर की परंपरागत सत्ता, सांस्कृतिक अस्मिता और जनभावनाओं की रक्षा का प्रतीक बन गया।

रानी–चो–रिस विद्रोह का महत्व इस तथ्य में निहित है कि इसने बस्तर के इतिहास में महिला नेतृत्व की एक सशक्त परंपरा को स्थापित किया। सामान्यतः औपनिवेशिक काल के अधिकांश विद्रोह पुरुष नेतृत्व के संदर्भ में चर्चित रहे हैं, किन्तु बस्तर में रानी जुगराज कुंवर ने जिस साहस, राजनीतिक दूरदर्शिता और संगठन क्षमता का परिचय दिया, वह भारतीय जनजातीय इतिहास में विशेष स्थान रखता है। उन्होंने न केवल राजमहल के भीतर विरोध व्यक्त किया, बल्कि जनता के बीच जाकर जनसमर्थन प्राप्त किया और दीर्घकाल तक औपनिवेशिक हस्तक्षेप के विरुद्ध प्रतिरोध बनाए रखा। इससे स्पष्ट होता है कि बस्तर के जनजातीय समाज में महिलाओं की भूमिका केवल पारिवारिक दायित्वों तक सीमित नहीं थी, बल्कि वे सामाजिक और राजनीतिक नेतृत्व की भी महत्वपूर्ण वाहक थीं।

रानी–चो–रिस विद्रोह का अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इसका स्वरूप बहुआयामी था। इसमें राजनीतिक प्रतिरोध, सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा, महिला नेतृत्व, जनसमर्थन, पारंपरिक राजसत्ता की प्रतिष्ठा तथा औपनिवेशिक हस्तक्षेप का विरोधकृये सभी तत्व एक साथ विद्यमान थे। यह आंदोलन इस बात का प्रमाण है कि बस्तर का जनजातीय समाज बाहरी नियंत्रण को केवल प्रशासनिक समस्या के रूप में नहीं, बल्कि अपनी परंपरा, सम्मान और स्वायत्तता पर आघात के रूप में देखता था। इसी कारण यह संघर्ष कई वर्षों तक चलता रहा और ब्रिटिश प्रशासन के लिए गंभीर चुनौती बना रहा।

साहित्यों का पुनरावलोकन

1. **बेहार, रामकुमार, एवं श्रीवास्तव, नर्मदा प्रसाद (1992)** ''आदिवासी बस्तर इतिहास एवं परम्पराएं'', मोतीतालाब पारा, जगदलपुर, छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र के अध्ययन के लिए यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। लेखक ने लेखन के केंद्र में आदिवासी संस्कृति तथा आदिवासी जनता के लिए संरक्षित और सुरक्षित स्थान बस्तर से जुड़े ज्ञानवर्धक तथ्यों को रखा है। इतिहास की पृष्ठभूमि में बस्तर में घटित विदोहों का उल्लेख किया गया है।
2. **बेहार, रामकुमार (1995)** ''बस्तर एक अध्ययन'', मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल, लेखक ने बस्तर की जनजातीय समाज व्यवस्था, पंचायतें, देवी–देवताओं तथा उनकी पूजा की पद्धतियों को लेखन का विषय बनाया गया है। बस्तर की विशेष भौगोलिक संरचना का उल्लेख करते हुए कांकेर के गढ़िया पहाड़, केशकाल की घाटी, इंद्रावती नदी और चित्रकूट जलप्रपात, अबूझमाड़ के जंगलों तथा वन्यजीवों का वर्णन भी पुस्तक की विषय वस्तु है। बस्तर की ऐतिहासिक राजनीतिक घटनाएं इस अंक में विशेष उल्लेखित हैं
4. **वर्ल्यानी, जे. आर. एवं साहसी, व्ही. डी. (1998)** ''बस्तर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास'',(प्रारंभ से 1947 ई. तक) दिव्या प्रकाशन, कांकेर, आदिकाल से स्वतंत्रता के समय तक बस्तर के इतिहास का उल्लेख है। बस्तर की भौगोलिक विशेषता, सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक महत्व के स्थलों, राजनीतिक घटनाओं, प्रशासनिक व्यवस्था का वर्णन किया है। परिवर्तनकारी जनजातीय संघर्षों में बस्तर वासियों के विभिन्न विद्रोहों का वर्णन भी पुस्तक में किया गया है।
5. **यदु, हेमू (2006)** ''छत्तीसगढ़ का गौरवशाली इतिहास'', बी. आर. पब्लिकेशन कार्पोरेशन, नई दिल्ली, छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं परम्पराओं का संकलन एवं अध्ययन एक विशिष्ट अध्याय के अंतर्गत किया गया है। इस संदर्भ में आदिवासी जीवन शैली, उनके संघर्षों का विवरण भी पुस्तक की विषय वस्तु है। इस कारण शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए अध्ययन की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक है।
6. **शुक्ल, सुरेश चंद्र एवं शुक्ला, डॉ. अर्चना (2009)** ''छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास'', शिक्षा दूत प्रकाशन, रायपुर, विभिन्न आंदोलनों की भूमिका का उल्लेख विदेशी शक्तियों के विरुद्ध छत्तीसगढ़ तथा बस्तर वासियों की एकजुटता के संदर्भ में किया गया है किंतु यह उल्लेख संक्षेप में है फिर भी शोध कार्य के लिए यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. रानी–चो–रिस विद्रोह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं प्रमुख कारणों का अध्ययन करना।
2. विद्रोह के स्वरूप का राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा महिला नेतृत्व के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना।
3. रानी जुगराज कुंवर के नेतृत्व, जनसमर्थन तथा विद्रोह के संगठनात्मक स्वरूप का मूल्यांकन करना।
4. ब्रिटिश हस्तक्षेप एवं बस्तर की पारंपरिक राजसत्ता के मध्य उत्पन्न संघर्ष की प्रकृति का अध्ययन करना।

5. बस्तर के जनजातीय इतिहास तथा भारतीय जनजातीय प्रतिरोध परंपरा में रानी–चो–रिस विद्रोह के योगदान एवं ऐतिहासिक महत्व का विश्लेषण करना।

रानी–चो–रिस विद्रोह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में बस्तर की राजनीतिक परिस्थितियाँ तीव्र परिवर्तन के दौर से गुजर रही थीं। 1854 ई. में ब्रिटिश शासन द्वारा बस्तर को नागपुर प्रांत के माध्यम से अपने नियंत्रण में लेने के पश्चात् राज्य के आंतरिक प्रशासन में निरंतर हस्तक्षेप प्रारम्भ हुआ। यद्यपि काकतीय राजवंश का औपचारिक शासन बना रहा, किन्तु वास्तविक प्रशासनिक अधिकार ब्रिटिश अधिकारियों और उनके समर्थित दीवानों के हाथों में केंद्रित होने लगे परिणामस्वरूप राजा की स्वायत्तता सीमित होती गई तथा पारंपरिक शासन व्यवस्था प्रभावित होने लगी।

राजा भैरमदेव के शासनकाल में ब्रिटिश अधिकारियों ने राजपरिवार के निजी एवं राजनीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया। विशेष रूप से राजा के वैवाहिक जीवन और उत्तराधिकार संबंधी विषयों में अंग्रेजों की भूमिका ने राजमहल के भीतर असंतोष उत्पन्न किया। इस घटना ने बस्तर के जनजातीय समाज में स्त्री–अस्मिता, महिला अधिकार, राजकीय गरिमा तथा उनके सांस्कृतिक स्वाभिमान के प्रश्न को बस्तर की राजनीति के केंद्र में ला दिया। यह संघर्ष बस्तर के तत्कालीन शासक भैरमदेव की दूसरी पटरानी जुगराज कुंवर देवी द्वारा अपने पति और बस्तर रियासत के तत्कालीन राजा भैरमदेव तथा बस्तर की रीति–नीति और परम्पराओं के साथ बस्तर के राजपरिवार में ब्रिटिश हस्तक्षेप के विरुद्ध किया गया था, जिसे ब्रिटिश शासन के अभिलेखों में "रानी–चो–रिस" अथवा "रानी का कोप" कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त राजकर्मचारियों की निरंकुशता, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, जनजातीय समाज की उपेक्षा तथा ब्रिटिश संरक्षण प्राप्त अधिकारियों के मनमाने व्यवहार ने भी जनता में व्यापक असंतोष उत्पन्न किया। इस प्रकार राजनीतिक हस्तक्षेप, राजकीय मर्यादा का ह्रास, सामाजिक असंतोष तथा औपनिवेशिक नीतियों ने संयुक्त रूप से रानी–चो–रिस विद्रोह की पृष्ठभूमि का निर्माण किया।

रानी–चो–रिस विद्रोह के कारण

अंग्रेज अधिकारी धीरे–धीरे बस्तर राजपरिवार के निजी एवं सामाजिक निर्णयों में भी दखल देने लगे थे। इसी नीति के अंतर्गत अंग्रेज अधिकारी फ्रेजर के प्रभाव में राजा भैरमदेव ने एक मुस्लिम महिला से विवाह किया। राजा की पटरानियों ने उस मुस्लिम महिला को स्थानीय भाषा में नावा बाई कहा। यह विवाह राजा का व्यक्तिगत निर्णय नहीं था बल्कि ब्रिटिश अधिकारी फ्रेजर की सलाह पर बस्तर राजा भैरमदेव ने धर्म से बाहर विवाह का निर्णय लिया था।

राजा भैरमदेव की पहली पत्नि जुगराज कुंवर देवी तथा दूसरी पत्नि सुवर्ण कुंवर देवी थीं। पूर्व से ही दो पत्नियों के होते हुए बस्तर नरेश का तीसरे विवाह का निर्णय लेना ही विवाद का मूल विषय था, क्योंकि बस्तरिहा जनजातीय समाज अन्य धर्म से विवाह की अनुमति नही देता था इसलिए राजा के इस कृत्य को जनजातीय समाज ने अपनी परम्परागत सामाजिक व्यवस्था का उल्लंघन माना।

जुगराज कुंवर देवी ने राजा के निर्णय को केवल पारिवारिक विवाद के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि इसे महिलाओं के अधिकार एवं सम्मान से जुड़ा प्रश्न बनाया। उन्होंने खुलकर राजा भैरमदेव के निर्णय का विरोध किया और महिलाओं को संगठित किया। इससे बस्तर की महिलाओं में आत्मसम्मान एवं अधिकार चेतना का विकास हुआ।

रानी–चो–रिस विद्रोह का घटनाक्रम

रानी–चो–रिस विद्रोह का आरंभ 1878 ई. में बस्तर के राजा भैरमदेव के शासनकाल में हुआ। इस समय ब्रिटिश प्रशासन बस्तर की आंतरिक राजनीति तथा राजपरिवार के मामलों में निरंतर हस्तक्षेप कर रहा था। ब्रिटिश अधिकारियों के प्रभाव में राजा भैरमदेव के वैवाहिक जीवन और उत्तराधिकार संबंधी निर्णयों में हस्तक्षेप किया गया।

राजा भैरमदेव के पूर्व से ही दो पत्नियों के होते हुए एक मुस्लिम महिला नावा बाई से तीसरा विवाह करने के पश्चात रानी जुगराज कुंअर ने खुलकर विरोध प्रारंभ किया। उन्होंने राजमहल की परम्परागत सीमाओं को तोड़ते हुए अपने असंतोष और क्रोध को सार्वजनिक रूप से व्यक्त किया। यह विरोध केवल व्यक्तिगत क्रोध तक सीमित नहीं था, बल्कि ब्रिटिश हस्तक्षेप एवं राजकीय निर्णयों के विरुद्ध प्रतिरोध का स्वर बन गया।

रानी ने महल छोड़कर बत्तीसा मंदिर में प्रवास किया और अपने समर्थकों के साथ स्वतंत्र रूप से संघर्ष प्रारंभ किया। इस घटना ने पूरे बस्तर में सामाजिक और राजनीतिक हलचल उत्पन्न कर दी। रानी के समर्थन में बस्तर की महिलाएं बड़ी संख्या में सामने आयीं। उन्होंने राजा भैरमदेव के निर्णय का विरोध करते हुए सार्वजनिक प्रदर्शन किए। महिलाओं का यह स्वर उस समय के लिए अत्यंत क्रांतिकारी माना जा सकता है। इस विद्रोह में रानी जुगराज कुंवर देवी और उनके सहयोगी बस्तर की महिलाओं का एक स्वर में यह नारा था कि राजा या तो नावा बाई को त्याग दें अथवा राजगद्दी छोड़ दें।

इस विद्रोह ने यह प्रमाणित किया कि बस्तर की जनजाति बहूल समाज में महिलाएं केवल सामाजिक भूमिका तक सीमित नहीं थीं, अपितु वे राजनीतिक चेतना से भी संपन्न थीं। महिलाओं की यह संगठित शक्ति ब्रिटिश प्रशासन के लिए भी चिंता का विषय बन गई। रानी–चो–रिस विद्रोह अल्पकालिक विरोध न होकर महिला आत्मसम्मान की दीर्घकालिक लड़ाई बन गई। यह संघर्ष लगभग आठ वर्षों तक निरंतर चलता रहा।

इतने लंबे समय तक आंदोलन का जारी रहना इस बात का प्रमाण था कि इसे जनता का व्यापक समर्थन प्राप्त था, विशेष रूप से बस्तर की महिलाओं की संवेदना और प्रत्यक्ष सहयोग रानी जुगराज कुंवर देवी को प्राप्त होता रहा। ब्रिटिश प्रशासन भी इस आंदोलन को पूर्णतः दबाने में सफल नहीं हो सका। समय बीतने के साथ यह संघर्ष बस्तर की जनस्मृति में प्रतिरोध एवं स्वाभिमान के प्रतीक के रूप में स्थापित हो गया। अंततः परिस्थितियां ऐसी बनीं कि ब्रिटिश प्रशासन को भी झुकना पड़ा और रानी जुगराज कुंवर देवी की स्थिति मजबूत होकर उभरी।

रानी–चो–रिस विद्रोह का स्वरूप

- **पूर्णतः महिला नेतृत्व आधारित विद्रोहः** यह विद्रोह मूख्यतः महिला नेतृत्व पर आधारित था जिसका संचालन बस्तर की महारानी जुगराज कुंवर के नेतृत्व में हुआ। उन्होंने बस्तर की तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों में सक्रिय भूमिका में आंदोलन का मार्गदर्शन करते हुए राजमहल से बाहर सार्वजनिक रूप से आंदोलन का नेतृत्व करना इस विद्रोह की प्रमुख विशेषता थी। उपलब्ध ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार आंदोलन की समस्त गतिविधियां रानी के नेतृत्व में संचालित हुईं जिसके कारण यह विद्रोह महिला नेतृत्व पर आधारित आंदोलन के रूप में विकसित हुआ।
- **विद्रोह का राजनीतिक स्वरूपः** रानी–चो–रिस विद्रोह का स्वरूप राजनीतिक था। इसका संबंध बस्तर राज्य की आंतरिक प्रशासनिक व्यवस्था, राजकीय अधिकारों तथा ब्रिटिश हस्तक्षेप से संबंधित परिस्थितियों से था। आंदोलन के दौरान राजसत्ता, उत्तराधिकार, प्रशासनिक निर्णय तथा राज्य संचालन से जुड़े प्रश्न प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। विद्रोह की गतिविधियां राजदरबार तथा उससे संबंधित राजनीतिक घटनाओं के इर्द–गिर्द संचालित हुईं। इस आंदोलन में राजपरिवार, प्रशासन तथा औपनिवेशिक प्रभाव से उत्पन्न परिस्थितियां स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।
- **विद्रोह का सामाजिक स्वरूपः** रानी–चो–रिस विद्रोह का सामाजिक स्वरूप अत्यंत महत्वपूर्ण था। विद्रोह के कारण में स्थानीय समाज की परम्पराएं, सामाजिक मान्यताएं तथा राजपरिवार के प्रति जनभावनाएं प्रमुख रूप से विद्यमान थीं। विद्रोह के दौरान समाज के ग्रामीण समुदाय, स्थानीय निवासी तथा राजपरम्परा से जुड़े लोगों ने अपनी सहभागिता दी। सामाजिक स्तर पर यह आंदोलन सामुदायिक भावनाओं तथा स्थानीय सामाजिक संरचना से जुड़ा रहा। इस कारण इसका प्रभाव केवल राजमहल तक सीमित न रहकर सामाजिक जीवन में भी दिखाई देता है।
- **विद्रोह का जनआधारित स्वरूपः** रानी–चो–रिस विद्रोह जन–आधारित विद्रोह था जिसमें स्थानीय जनता की सहभागिता विद्यमान थी तथा विभिन्न क्षेत्रों के लोगों का समर्थन आंदोलन के साथ बना रहा। आंदोलन का संचालन केवल राजपरिवार तक सीमित नहीं था बल्कि उसकी गतिविधियों में सामान्य जनता की भागीदारी भी दिखाई देती है। जनसहभागिता के कारण यह विद्रोह कई वर्षों तक सक्रिय रहा। स्थानीय स्तर पर लोगों द्वारा रानी के प्रति व्यक्त समर्थन ने प्रतिरोध को निरंतर बनाए रखा तथा उसकी संगठनात्मक संरचना को स्थिरता प्रदान की।
- **औपनिवेशिक विरोध का स्वरूपः** रानी–चो–रिस विद्रोह औपनिवेशिक हस्तक्षेप की पृष्ठभूमि में विकसित हुआ। आंदोलन के दौरान ब्रिटिश अधिकारियों की भूमिका, प्रशासनिक प्रभाव तथा राज्य के आंतरिक मामलों में बढ़ते हस्तक्षेप से संबंधित परिस्थितियाँ सामने आती हैं। विद्रोह की गतिविधियाँ स्थानीय शासन व्यवस्था तथा औपनिवेशिक प्रशासन के मध्य उत्पन्न तनाव से संबंधित थीं। आंदोलन के विभिन्न चरणों में ब्रिटिश प्रशासन की उपस्थिति तथा उसके निर्णयों का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

- **विद्रोह का संगठनात्मक स्वरूपः** रानी–चो–रिस विद्रोह का स्वरूप संगठित था। आंदोलन का संचालन योजनाबद्ध ढंग से किया गया तथा उसकी गतिविधियां निरंतर क्रम में संचालित होती रहीं। विद्रोह में नेतृत्व, जनसंपर्क तथा संचालन के लिए एक निश्चित व्यवस्था दिखाई देती है। विद्रोह के आरम्भ से अंत तक उसके संगठनात्मक स्वरूप की निरंतरता बनी रही। उपलब्ध ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार यह विद्रोह किसी आकस्मिक प्रतिक्रिया का परिणाम न होकर संगठित गतिविधियों के माध्यम से संचालित हुआ।
- **दीर्घकालिक स्वरूपः** रानी–चो–रिस विद्रोह का स्वरूप दीर्घकालिक था। यह आंदोलन लगभग ''आठ वर्षों (1878–1886 ई.) तक निरंतर चलता। बस्तर की आम जनता तथा विशेष रूप से महिलाओं की निरंतर भागीदारी के कारण यह विद्रोह उक्त दीर्घ अवधि तक चलता रहा। लंबे समय तक विद्रोह का सक्रिय रहना उसके संगठन, नेतृत्व तथा जनसंपर्क की निरंतरता को दर्शाता है। विद्रोह की समयावधि इसे बस्तर के उन्नीसवीं शताब्दी के दीर्घकालिक आंदोलनों में स्थान प्रदान करती है।
- **महिला सहभागिता का स्वरूपः** रानी–चो–रिस विद्रोह में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता विद्यमान थी। उपलब्ध ऐतिहासिक विवरणों में रानी के समर्थन में महिलाओं की उपस्थिति तथा आंदोलन में उनकी भागीदारी का उल्लेख मिलता है। महिलाओं की उपस्थिति ने आंदोलन को सामाजिक आधार प्रदान किया तथा इसकी गतिविधियों में उनकी भूमिका भी दिखाई देती है। आंदोलन के दौरान महिलाओं की सहभागिता सार्वजनिक स्तर पर दर्ज हुई, जिससे यह विद्रोह महिला भागीदारी वाले आंदोलनों में सम्मिलित होता है।

रानी–चो–रिस विद्रोह का परिणाम

रानी–चो–रिस विद्रोह से ब्रिटिश शासन के विरूध्द जनजातीय समाज और राजपरिवार अधिक संगठित, व्यापक एवं सशक्त रूप में सामने आए। अंग्रेजों द्वारा बस्तर की पारम्परिक शासन व्यवस्था, राजपरिवार के निजी मामलों, उत्तराधिकार संबंधी नियम तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं में हस्तक्षेप स्थानीय जनता को किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं था। इस संघर्ष के कारण ब्रिटिश प्रशासन को आदिवासी क्षेत्रों में अत्यधिक हस्तक्षेप और दमनकारी नीतियां गंभीर जनविरोध की संवेदनशीलता का अनुभव हुआ, अतः प्रशासन को अपनी कार्यप्रणाली में सावधानी बरतनी पड़ी। विद्रोह के कारण बस्तर की जनता में स्वाभिमान, सांस्कृतिक अस्मिता तथा अपने अधिकारों की रक्षा के प्रति नई चेतना और आत्मविश्वास का संचार किया।

दीर्घकालीन दृष्टि से रानी–चो–रिस विद्रोह ने बस्तर के जनजातीय प्रतिरोध आंदोलन को नई दिशा और प्रेरणा प्रदान की। इस संघर्ष ने जनजातीय समुदायों के बीच संगठन, एकता और सामूहिक नेतृत्व की भावना को मजबूत किया तथा यह विश्वास स्थापित किया कि संगठित प्रतिरोध के माध्यम से औपनिवेशिक नीतियों का प्रभावी विरोध किया जा सकता है। रानी जुगराज कुंवर साहस, स्वाभिमान, नेतृत्व और सांस्कृतिक गौरव की प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित हुईं। इस प्रकार रानी–चो–रिस विद्रोह केवल तत्कालीन राजनीतिक संघर्ष नहीं था, बल्कि बस्तर की सांस्कृतिक स्वायत्तता, जनजातीय अधिकारों, पारम्परिक शासन व्यवस्था और औपनिवेशिक हस्तक्षेप के विरुद्ध संचालित एक ऐतिहासिक आंदोलन था, जिसने बस्तर के स्वतंत्रता–संघर्ष और जनजातीय इतिहास में स्थायी एवं गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया।

रानी–चो–रिस विद्रोह का महत्व

रानी–चो–रिस विद्रोह ने बस्तर के जनजातीय इतिहास में महिला नेतृत्व, सामाजिक न्याय तथा औपनिवेशिक विरोध की चेतना को नई दिशा प्रदान करते हुए यह स्थापित किया कि जनजातीय समाज अपनी सांस्कृतिक पहचान, राजकीय परम्पराओं तथा सामाजिक सम्मान की रक्षा के लिए संगठित संघर्ष करने में सक्षम था। इस विद्रोह ने बस्तर में जनजातीय स्वाभिमान, सामुदायिक एकता तथा राजनीतिक जागरूकता को सुदृढ़ किया। इस जनजातीय प्रतिरोध में स्थानीय नेतृत्व ने सीमित संसाधनों के बावजूद औपनिवेशिक सत्ता का प्रभावी विरोध किया। यह महिला नेतृत्व, जनजातीय अधिकारों तथा औपनिवेशिक विरोध की सशक्त अभिव्यक्ति के रूप में है। इसने बस्तर की जनस्मृति में रानी जुगराज कुंवर को साहस, स्वाभिमान और प्रतिरोध के स्थायी प्रतीक के रूप में स्थापित किया तथा भारतीय जनजातीय इतिहास में उनके योगदान को विशिष्ट स्थान प्रदान किया।

निष्कर्ष

रानी–चो–रिस विद्रोह बस्तर की तत्कालीन राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों से उत्पन्न हुआ था, जिसमें रानी जुगराज कुंवर के नेतृत्व, राजकीय परम्पराओं, सामाजिक सम्मान तथा स्थानीय जनभावनाओं की प्रमुख भूमिका रही। लगभग

आठ वर्षों तक चले इस रानी का निरंतर नेतृत्व तथा स्थानीय समाज का समर्थन इसके प्रमुख आधार रहे। विद्रोह की गतिविधियों में ब्रिटिश हस्तक्षेप के प्रति असंतोष और बस्तर की पारंपरिक व्यवस्था के संरक्षण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

रानी–चो–रिस विद्रोह का ऐतिहासिक महत्व बस्तर में महिला नेतृत्व, जनजातीय सामाजिक चेतना और राजनीतिक प्रतिरोध के संदर्भ में स्थापित होता है। रानी जुगराज कुंवर ने जिस प्रकार लंबे समय तक आंदोलन का नेतृत्व किया, उसने बस्तर के जनजातीय समाज में महिला नेतृत्व की सक्रिय भूमिका को सामने रखा। इस आंदोलन ने राजकीय परम्परा, सामाजिक सम्मान और स्थानीय अधिकारों से जुड़े प्रश्नों को सार्वजनिक प्रतिरोध का आधार प्रदान किया तथा बस्तर के इतिहास में इसे महिला नेतृत्व और जनजातीय प्रतिरोध से जुड़े महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में स्थान मिला।

सदर्भ सूची

1. आबिदी, शम्मी (2022) *आदि विद्रोहः छत्तीसगढ़ के आदिवासी विद्रोह एवं जननायक.* आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नवा रायपुर।
2. बेहार, रामकुमार एवं श्रीवास्तव, नर्मदा प्रसाद (1992) *आदिवासी बस्तर इतिहास एवं परम्पराएं.* मोतीतालाब पारा, जगदलपुर।
3. बेहार, रामकुमार (1995) *बस्तर एक अध्ययन.* मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
4. सेंट्रल प्रोविन्स डिस्टिक्ट्र गजेटियर 1909।
5. शर्मा, रामविजय (1997) *बस्तर में जनजातीय आंदोलन एवं जनजागृतिः एक ऐतिहासिक विश्लेषण.* श्री प्रकाशन, भोपाल।
6. शुक्ल, हीरालाल (2007) *आदिवासी बस्तर का वृहद इतिहास–पंचम खंड, आधुनिक बस्तर परतंत्रता और प्रतिकार.* (1777–1947 ई.), बी. आर. पब्लिशिंग कार्पोरेशन, दिल्ली।
7. शुक्ल, हीरालाल (2007) *छत्तीसगढ़ का जनजातीय इतिहास.* मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
8. शुक्ल, हीरालाल (2009) *बस्तर का मुक्तिसंग्राम.* मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
9. शुक्ल, सुरेश चंद्र एवं शुक्ला, अर्चना (2003) *छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास.* शिक्षा दूत प्रकाशन, रायपुर।
10. वर्ल्यानी, जे. आर. एवं साहसी, व्ही. डी. (1998) *बस्तर का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास.* (प्रारंभ से 1947 ई. तक) दिव्या प्रकाशन, कांकेर।
11. यदु, हेमू (2006) *छत्तीसगढ़ का गौरवशाली इतिहास.* बी. आर. पब्लिकेशन कार्पोरेशन, नई दिल्ली।

––==00==––